



तुम लोगों ने वह तस्वीर देखी होगी जिसमें न्यायाधीश को आँखों पर पट्टी बाँधकर तराजू लिए हुए चित्रित किया गया है। तराजू के दोनों पलड़े सम पर रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि न्यायाधीश की दृष्टि में सब बराबर रहते हैं; इसीलिए उसका न्याय निष्पक्ष रहता है। इस एकांकी में ऐसे ही न्याय का वर्णन किया गया है।

पात्र

- अली — बगदाद का एक नाई
 हसन — बगदाद का एक लकड़हारा
 खलीफा — बगदाद का सम्राट
 नौकर

पहला दृश्य

(स्थान— बगदाद की एक सड़क पर अली नाई की दुकान। समय—दोपहर। अली नाई अपनी दुकान पर बैठा अपना उस्तरा पैना कर रहा है। अपने गधे पर लकड़ी लादे लकड़हारे हसन का प्रवेश।)

- हसन — लकड़ी ले लो, लकड़ी। अच्छी सूखी लकड़ी ले लो।
 अली — ओ लकड़हारे ! अरे भाई लकड़हारे, इधर आना।
 हसन — (अपने गधे को रोककर अली के पास आता है।) भाई साहब, क्या आपने ही मुझे आवाज लगाई थी ? क्या आपको लकड़ी चाहिए ?
 अली — हाँ भाई, बुलाया तो इसीलिए है। लकड़ियाँ सूखी हैं ? गीली तो नहीं हैं ?
 हसन — अजी साहब, आप खुद देख लीजिए। ऐसी सूखी और ऐसी अच्छी लकड़ी किसी के पास नहीं मिलेगी।

शिक्षण-संकेत : न्याय की दृष्टि में सब बराबर होते हैं— कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। अपराध करने पर न्याय न तो अधिकारी को क्षमा करता है और न कर्मचारी को। न्यायाधीश की दृष्टि समान रहती है। वह छोटे-बड़े का भेद नहीं करता। इस पाठ में यही दर्शाया गया है। बालसभा में इस एकांकी का मंचन कराएँ।

- अली — ठीक है, मैं तुम्हारी बात का भरोसा किए लेता हूँ। इस गधे पर लदी सारी लकड़ियों का कितना दाम चाहिए ?
- हसन — सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल है।
- अली — पाँच शकाल! हैं तो ज्यादा, पर चलो मुझे मंजूर है। गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल तुम्हें मिलेगा। उतारो लकड़ी।
- हसन — ठीक है। मैं अभी लकड़ियाँ उतारता हूँ।

(हसन गधे पर से लकड़ियाँ उतारकर दुकान के पास ढेर लगा देता है।)



- हसन — लीजिए, मैंने सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं। अब आप दाम चुका दीजिए।
- अली — तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न ?
- हसन — जी हाँ, सब लकड़ियाँ उतार दीं। हाथ कंगन को आरसी क्या ? आप खुद देख लीजिए।
- अली — ठीक है, मैं भी देख लूँ।

(दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। गधे की पीठ पर लकड़ी की बनी काठी को देखकर)

अरे, यह क्यों नहीं उतारी ? यह भी तो लकड़ी ही है।

- हसन – हुजूर, यह लकड़ी की तो है, लेकिन यह गधे की काठी है, जीन है। यह जलाने के लिए थोड़े ही होती है।
- अली – मियाँ लकड़हारे, जो बात तय हुई थी, उसे जरा याद कीजिए। मैंने कहा था कि गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल होगा। यह भी तो लकड़ी की ही है। इसे भी उतारिए।



- हसन – अजी साहब! क्यों गरीब आदमी के साथ ठिठोली करते हो ? मेरा और अपना समय आप क्यों बर्बाद कर रहे हैं ? मुझे दाम दीजिए जिससे मैं अपने घर जाऊँ।
- अली – देखो दोस्त! यह ठिठोली और मज़ाक की बात नहीं है। जो सौदा हुआ है, उसे आप भी निबाहिए, मैं भी निबाहूँगा। जब तक यह काठी उतारकर यहाँ नहीं रखते, तब तक मैं एक शकाल भी नहीं दूँगा।
- हसन – (क्रोध में भरकर) यह आप क्या कह रहे हैं ? आप तो पक्के धोखेबाज लगते हैं। क्या आज तक किसी ने काठी भी लकड़ियों के साथ बेची है ?

अली — (हाथ में एक लकड़ी उठाकर) अबे बदतमीज! तुझे बोलने का भी ढंग नहीं मालूम। मुझे गालियाँ बक रहा है। यह ले, यह ले तेरा दाम।

(अली, हसन को लकड़ी से मारता है। हसन बचता हुआ भागता है। अली गधे की पीठ से काठी उतार लेता है और अपनी दुकान पर जाकर बैठ जाता है। हसन थोड़ी देर में अपने गधे को ले जाता है।)

दूसरा दृश्य

(स्थान— खलीफा का दरबार। खलीफा एक ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं। आसपास सिपाही, मुंसिफ आदि बैठे हैं। दरबान आता है।)

दरबान — हुजूर! द्वार पर एक फरियादी आया है। कहता है, मेरे साथ अन्याय हुआ है।

खलीफा — उसे अंदर आने दो।

(हसन अंदर आता है।)

हसन — जहाँपनाह! इंसान कीजिए।

खलीफा — बोलो, क्या बात है? किसने तुम्हारे साथ बेइंसाफी की है?

हसन — हुजूर! मैं लकड़ी बेचने के लिए देहात से आया था। बाजार में जब मैं अली नाई की दुकान के पास से गुजरा तो उसने लकड़ी का सौदा किया। मैंने सारी लकड़ी पाँच शकाल में देना मंजूर कर लिया। पाँच शकाल में लकड़ियों के साथ उसने काठी भी उतार ली। मुझे मारा और दाम भी नहीं दिया।

खलीफा — उसने काठी क्यों उतार ली?

हसन — हुजूर, वह कहने लगा कि काठी लकड़ी की बनी है, इसलिए मेरे सौदे में आती है।

खलीफा — तो काठी लकड़ी की बनी थी?

हसन — जी हाँ, जहाँपनाह!

खलीफा — भाई, उसने तुम्हारे साथ धोखा तो किया लेकिन उसका कहना भी ठीक है। कानून के तहत उसके खिलाफ कुछ नहीं किया जा सकता। लेकिन तुम्हारे साथ बेइंसाफी तो हुई है। अच्छा, इधर आकर मेरी बात सुनो।

(हसन खलीफा के पास जाता है। खलीफा उसके कान में कुछ कहते हैं। हसन बाहर चला जाता है।)

तीसरा दृश्य

(अली अपनी दुकान में बैठा अपना उस्तरा तेज़ कर रहा है। हसन का दुकान में प्रवेश।)

अली – (पहचानकर) क्यों भाईजान, कैसे आए? पुरानी बात भूल जाइए। क्या आपको हजामत बनवानी है?

हसन – दोस्त अली! उस दिन तो गलती मेरी ही थी। मुझे उसका नतीजा मिल गया। मैं तो आज हजामत बनवाने आया हूँ। मेरा एक साथी और है। उसकी भी हजामत बनानी है।

अली – अरे भाई, आओ, आओ। हजामत बनाना तो मेरा पेशा ही है।

हसन – दोनों की हजामत बनाने की मजदूरी क्या होगी?

अली – दोनों की हजामत के लिए एक शकाल दे दीजिए।

हसन – ठीक है। पहले मेरी हजामत बना दीजिए।

(अली हसन के बाल काटता है। बाल काटकर)

अली – लीजिए, आपकी हजामत बन गई। अपने साथी को भी बुला लीजिए।



हसन — मैं अभी उसे लेकर आता हूँ।

(बाहर जाता है और गधे की रस्सी पकड़े हुए उसे अंदर ले आता है।)

हसन — लो भाईजान! मेरा साथी भी आ गया। इसकी हजामत भी बना दीजिए।

अली — अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा?

हसन — जी हाँ, यही तो मेरा साथी है। इसी के तो बाल कटवाने हैं।

अली — या अल्लाह! यह क्या कहता है? अरे बेवकूफ, क्या कभी गधे के भी बाल काटे जाते हैं? तूने फिर बेवकूफी की बात की। पहले मेरे हाथों मार खा चुका है। भाग यहाँ से नहीं तो हड्डी-पसली तोड़कर रख दूँगा।

हसन — भाईजान! इसमें मारने-पीटने की क्या बात है? सौदा तो सौदा ही होता है।

अली — अबे! कानून मत बघार। यहाँ से सीधे भाग जा, जल्दी कर।

हसन — अच्छा जाता तो हूँ, पर गरीब को सताना ठीक नहीं है।

(हसन गधे को लेकर चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(स्थान— खलीफा का दरबार। खलीफा अपने सिंहासन पर बैठे हैं। हसन उनके सामने हाजिर होता है।)

खलीफा — क्यों भाई! क्या तुमने मेरे कहे मुताबिक काम किया?

हसन — जी हाँ, जहाँपनाह! आज अली नाई ने मेरे और मेरे साथी के बाल एक शकाल में काटना मंजूर किया था। उसने मेरे बाल तो काट दिए पर मेरे साथी के बाल नहीं काटे और मुझे और मेरे साथी को अपनी दुकान से बाहर निकाल दिया।

खलीफा — ठीक है। अब तुम्हारे साथ इंसाफ होगा। (एक सिपाही से) अली नाई को फौरन दरबार में हाजिर किया जाए। उससे अपने सारे औजार भी साथ लाने को कहा जाए।

(सिपाही जाता है। थोड़ी देर में वह अली नाई को अपने साथ लेकर आता है।)

अली — जहाँपनाह, मेरे लिए क्या हुक्म है ?

खलीफा — क्या तुम्हारा ही नाम अली नाई है ?

- अली — जी हाँ, जहाँपनाह।
- खलीफा — तुम्हारे खिलाफ यह आदमी आरोप लगा रहा है कि तुमने आज सुबह इसके तथा इसके साथी के बाल काटने का सौदा किया था, परन्तु बाद में तुम मुकर गए। क्या यह सच है ?
- अली — सरकार, मैंने इसके बाल काट दिए, लेकिन यह अपने साथी के रूप में एक गधे को ले आया। आप ही सोचिए हुजूर, क्या कभी गधे की भी हजामत होती है ?
- खलीफा — तुम ठीक कहते हो, गधे की हजामत कभी नहीं होती। पर क्या तुमने कभी यह भी सुना है कि गधे पर रखी काठी भी लकड़ियों में गिनी जाती है ? अगर यह ठीक है तो गधा भी आदमी का साथी हो सकता है और उसके भी बाल बनवाए जा सकते हैं। (अली चुप रहता है।)
- खलीफा — अब अच्छा यही है कि इस गधे के सारे बाल इसी समय साफ कर डालो।
(अली मुँह लटकाए बाहर जाता है और गधे पर पहले साबुन मलता है और फिर उसके बाल काटता है। गधे की हजामत बनाने के बाद वह अंदर आता है।)
- अली — हुजूर, मैंने आपके हुक्म का पालन कर दिया।
- खलीफा — देखो अली, भला आदमी कभी गरीब को नहीं सताता। आइंदा के लिए मेरी बात गाँठ बाँध लेना। (अली नाई खलीफा को सलाम करके जाता है।)
- खलीफा — (हसन से) हसन भाई, इधर आइए। अली ने आपके साथ जो बदसलूक किया, उसका नतीजा उसे मिल गया। तुम्हारी काठी का दाम तुम्हें मिल जाएगा। (खजांची से) खजांची, हसन को दस मोहरें दे दी जायँ। (हसन बहुत प्रसन्न होता है। वह मोहरें लेकर खलीफा को दुआ देता हुआ चला जाता है।)

शब्दार्थ

उस्तरा	—	नाई का छुरा	आरोप लगाना	—	दोष लगाना
इंसाफ	—	न्याय	मुंसिफ	—	न्यायाधीश
जहाँपनाह	—	बादशाह, सम्राट	बेइंसाफी	—	अन्याय
शकाल	—	एक सिक्का, जो बगदाद में चलता है,			
		जैसे हमारे यहाँ रुपया चलता है।			

ठिठोली करना	—	मज़ाक करना, हँसी करना
राह लेना	—	अपने रास्ते चले जाना
मखौल उड़ाना	—	मज़ाक उड़ाना
आइंदा	—	भविष्य में, आगे कभी
बदसलूक	—	बुरा बर्ताव
हड़डी-पसली तोड़ना	—	बहुत पीटना
काठी	—	घोड़े या गधे पर रखी जाने वाली जीन
जहाँपनाह	—	संसार को आश्रय देने वाला (बादशाह के लिए संबोधन है)
दुआ देना	—	प्रार्थना करना, आशीर्वाद देना
दरबान	—	दरबार का सेवक
मुकर जाना	—	कही हुई बात से हट जाना

टिप्पणी :

जहाँपनाह — मुसलमान बादशाहों के लिए सम्बोधन, जिसका अर्थ होता है जगत् का आश्रयदाता।

प्रश्न और अभ्यास

- प्रश्न 1 अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा ?
- प्रश्न 2 लकड़ी की काठी की बात पर खलीफा ने न्याय करने के बाद क्या कहा ?
- प्रश्न 3 अली को अंत में गधे की हजामत क्यों बनानी पड़ी ?
- प्रश्न 4 अली ने लकड़ियों के साथ ही काठी भी ले ली। तुम्हारी राय में अली का काम उचित था या अनुचित ? क्यों ?
- प्रश्न 5 नीचे लिखे प्रश्नों के तीन-तीन उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर चुनकर लिखो।
- क. अली के द्वारा लकड़ियों के साथ लकड़ी की काठी माँगना नियमानुसार—
 (क) सही था (ख) गलत था (ग) पता नहीं
- ख. अंत में अली को हसन के गधे की हजामत बनानी पड़ी?
 (क) स्वयं की मर्जी से
 (ख) हसन के कहने पर
 (ग) खलीफा के कहने पर

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक नीचे दिए शब्द बोलें और बच्चों से श्रुतिलेख लिखवाएँ।
जहाँपनाह, खलीफा, लकड़हारा, धोखेबाज, दुकान, बाज़ार, अल्लाह, खजांची।
- बच्चे ऊपर दिए शब्दों पर एक-एक वाक्य बनाकर बोलें।

प्रश्न 1 आदरसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को फिर से लिखो।

जैसे— क्या तुमने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क्या आपने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क. जो सौदा हुआ है, उसे तुम भी निभाओ।

ख. तुम खुद देख लो।

ग. अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा ?

घ. यह क्या कहता है ?

प्रश्न 2 'तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न?' इस वाक्य को समझो और इसका अर्थ लिखो।

प्रश्न 3 इन शब्दों के हिन्दी में समान अर्थवाले शब्द लिखो :

मंजूर, हाजिर, खुद, गरीब, हुजूर, खिलाफ।

प्रश्न 4 क. 'हाथ कंगन को आरसी क्या' यह एक कहावत है। इसका अर्थ है, जो चीज हमारे सामने है उसे बताने के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। यह कहावत इस पाठ में प्रयोग की गई है। इसका उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

ख. अपनी बोली की कोई एक कहावत अर्थ सहित लिखो और उसे उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो।

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. अब तुम दाम चुकाओ। (आदरसूचक वाक्य में)

ग. अली दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

घ. तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं। (प्रश्नवाचक में)

प्रश्न 6 इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो :

लकड़ियाँ/लकड़ियाँ, विद्यार्थियों/विद्यार्थियों, दृश्य/द्रश्य, ढेर/ढेर, द्वार/द्वार,
थोड़ी/थोड़ी, पाँच/पाँच;

रचना

- तुम्हारे आसपास के लोग अपने झगड़े सुलझाने कहाँ जाते हैं? उसके बारे में लिखो।

गतिविधि

- अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में इस एकांकी का मंचन करो।
- इस एकांकी का शीर्षक है 'इंसाफ'। क्या इसका कोई और भी शीर्षक हो सकता है ? सोचो और लिखो।

